माननीय राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का आकार वीडियोटेक द्वारा आयोजित फिल्ममोत्सव के पुरस्कार वितरण समारोह में उद्बोधन

स्थान :- भोपाल, दिनांक:- 14 जून, 2013 समय :-

आकार वीडियोटेक द्वारा आयोजित फिल्मोत्सव के पुरस्कार वितरण समारोह में भाग लेते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है।

भारत में पिछले एक सौ सालों से चलचित्रों का निर्माण होता आ रहा है तथा भारतीय सिनेमा ने अपने सौ वर्षों की यात्रा सफलता पूर्वक सम्पन्न की है। भारतीय फिल्म का सफर दादा साहब फालके की फिल्म "राजा हरिशचंद्र" से 1933 में हुआ था। तब से हमारे देश में सामाजिक अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने वाली, धार्मिक तथा पौराणिक, एतिहासिक, देश प्रेम से सम्बधिंत कथाओं पर आधारित चलचित्रों का निर्माण हुआ करता था। इन्हें बहुत अधिक पसंद भी किया जाता था। परन्तु पश्चिमी सभ्यता और उदार आर्थिक नीतियों का प्रभाव भारतीय फिल्म उद्योग पर साफ नजर आने लगा। शिक्षाप्रद, उद्देश्यपूर्ण और गरीबों किसानों की समस्याओं पर बनने वाली फिल्मों की संख्या धीरे-धीरे कम होती गई और भौतिक और व्यावसायिक लाभ देने वली फिल्में बनने लगीं।

भारतीय फिल्मकारों की इस सोच में आए बदलाव ने फिल्मों की कथा-पटकथा को पूरी तरह से बदल दिया, खास कर बड़े फिल्मकारों की। उन्होंने ऐसे विषय चुनने शुरू कर दिए जो बहुत ही सीमित वर्ग की पसंद के थे, लेकिन बदले में करोंड़ों और डालर की कमाई देने वाले थे। उन्होंने व्यापक भारतीय समाज की अनदेखी शुरू कर दी। इसका परिणाम यह हुआ कि देश का समाजिक यथार्थ दरकिनार हो गया, दलित, व पिछड़े सीन से बाहर हो गये। अब जो फिल्में बनती है उनकी कहानी देश के सपन्न या मध्यवर्ग के परिवारों के इर्द-गिर्द धूमती हैं। इसी का परिणाम है कि आज समाज के नैतिक मूल्यों और युवाओं के चरित्र में गिरावट आ रही है। समाज का युवा वर्ग भटक गया है। बालीवुड का यह बदलता चेहरा, जो करोड़ों रूपये और डालर कामाने में रूचि ले रहा है, इसके भविष्य के लिए ठीक नहीं है। क्योंकि जड़ों से कट कर किसी विशाल वृक्ष की कल्पना दिवास्वप्न ही साबित होगी।

सिनेमा आधुनिक युग की बहुत बड़ी देन है। इसने एक और जहां लोगों को मनोरंजन का एक नया रास्ता दिखाया, वहीं बड़े चुपके से समाज के जीवन मूल्यों को भी पुनर्भाषित किया है। वास्वत में सिनेमा तकनीक के साथ साथ संस्कृति की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के रूप में एक कला है। समाज और सिनेमा दोनों एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

नई पीढ़ी पर सिनेमा का विशेष रूप से प्रभाव पड़ता है। वास्तव में नई पीढ़ी के लिए सिनेमा की वही भूमिका है जो संयुक्त परिवार में दादी-नानी की होती थी। आजकल बड़े शहरों में एकल परिवार होते हैं जहां दादी-नानी नहीं होतीं। तो उस समय बच्चों, युवाओं के सामाजीकरण में दादी-नानी जो बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं, वही भूमिका आजकल मूल रूप से सिनेमा निभा रहा है। भारतीय संस्कृति की रक्षा करने में सिनेमा की बड़ी भूमिका है। अगर यह संस्कृति बची हुई है तो आम आदमी ने इसे बचाया हुआ है जो फिल्म बडे शौक से देखता है। हमारे गावों में जो चौपाल होती थी, आज का सिनेमा उसी का कलात्मक विस्तार है।

हमारे यहां सिनेमा उद्योग के रूप में जाना जाता है पर मूलत: यह लोक संस्कृति के प्रचार-प्रसार का माध्यम है। सिनेमा कला का माध्यम नहीं बल्कि कला का रूप है। सिनेमा खुद एक साहित्य है। आज के सिनेमा की जो सबसे बड़ी कमी है, वह है सार्थक संवाद की कमी। कस्बे का जो जीवन है उसका महत्व घटा है। वास्तव में फिल्मों में जो गांव दिखाए जा रहे हैं वे असली गांव नहीं हैं। पारंपरिक गांवों की आंतरिक शक्ति उनमें नहीं है।

मुझे आशा है कि आने वाले दस सालों में बालीवुड़ का सिनेमा हालीवुड के सिनेमा से काफी आगे चला जाएगा तब दुनिया के ज्यादातर देशों में भारतीय फिल्मों की नकल होगी, जैसी आज हालीवुड के फिल्मों की हो रही है। भारत को एक महान शक्ति के रूप में स्थापित करने की दृष्टि से सिनेमा की बहुत बड़ी भुमिका होगी।

हमारे प्रदेश का फिल्मों से बहुत पुराना रिश्ता है। लता मंगेशकर और किशोर कुमार, रजामुराद, और जावेद जैसे कई प्रसिद्ध गायक और कलाकार इसी प्रदेश में जन्में हैं। प्रदेश में कलाकारों को प्रोत्साहन करने और उन्हें आगे बढ़ने का अवसर देने के लिए प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री स्व. श्री अर्जुन सिंह ने भोपाल में भारत भवन का निर्माण कराया। जो कला और रंग मंच का प्रमुख केन्द्र बन गया है। आज वहां से हजारों युवा प्रशिक्षण प्राप्त कर फिल्मों और रंग मंच पर अपनी कला का प्रदर्शन कर रहे हैं।

मैं आकार वीडियोटेक को इस कार्यक्रम को आयोजित करने के लिए बधाई देता हूं। मुझे प्रसन्नता है कि श्री शशिकांत जैसे युवा फिल्मकार, सामाजिक सरोकारों के संदेशों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सिनेमा जैसे सशक्त माध्यम को अपना रहे हैं। आशा है कि वे भविष्य में भी इसी प्रकार कोशिशें जारी रखेंगे।

जय हिन्द।